अशोक वाजपेयी

जन्म	:	16 जनवरी 1941 ।
जन्म-स्थान	:	दुर्ग, छत्तीसगढ़ ।
मूल निवास	:	सागर, मध्य प्रदेश ।
माता-पिता	:	निर्मला देवी एवं परमानंद वाजपेयी ।
शिक्षा	:	प्रारंभिक शिक्षा गवर्नमेंट हायर सेकेंड्री स्कूल, सागर; सागर विश्वविद्यालय से बी० ए० और सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से अंग्रेजी में एम० ए० ।
वृत्ति	:	भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, कई महत्त्वपूर्ण दायित्वों का निर्वाह, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति पद से सेवानिवृत्त हुए ।
संप्रति	:	दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन ।
सम्मान	:	साहित्य अकादमी पुरस्कार, दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान, फ्रेंच सरकार का ऑफिसर आव् द आर्डर आव् आर्ट्स एंड लैटर्स 2005, पोलिश सरकार का ऑफिसर आव् द आर्डर आव् क्रास 2004 सम्मान आदि ।
कृतियाँ	:	तीन दर्जन के लगभग मौलिक और संपादित कृतियाँ प्रकाशित । शहर अब भी संभावना है, एक पतंग अनंत में, अगर इतने से, तत्पुरुष, कहीं नहीं वहीं, बहुरि अकेला, थोड़ी सी जगह, घास में दुबका आकाश, आविन्यो, अभी कुछ और, समय के पास समय, इबारत से गिरी मात्राएँ, कुछ रफू कुछ थिगड़े, उम्मीद का दूसरा नाम, विवक्षा, दुख चिट्ठीरसा है (कविता संग्रह)। फिलहाल, कुछ पूर्वग्रह, समय से बाहर, सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं, कविता का गल्प, कवि कह गया है (आलोचना)। तीसरा साक्ष्य, साहित्य विनोद, कला विनोद, पुनर्वसु, कविता का जनपद (संपादित कृतियाँ)। इसके अतिरिक्त मुक्तिबोध, शमशेर और अज्ञेय की चुनी हुई कविताओं का संपादन। कुमार गंधर्व, निर्मल वर्मा, जैनेंद्र कुमार, हजारी प्रसाद द्विवेदी और अज्ञेय पर एकाग्र संपादित पुस्तकें । स्तंभलेखन : 'कभी कभार' ।
साहित्यिक पत्रकारिता		समवेत, पहचान, पूर्वग्रह, बहुवचन, कविता एशिया, समास आदि का संपादन। 'द बुक रिव्यू' समेत अनेक पत्रिकाओं के सलाहकार संपादक ।

अशोक वाजपेयी समसामयिक हिंदी के एक प्रमुख कवि, आलोचक, विचारक, कला मर्मज्ञ, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी हैं। कवि एवं आलोचक के रूप में उनका उदय बीसवीं शती के सातवें-आठवें दशक में हुआ था। शती के अंतिम वर्षों में वे देश के शीर्षस्थ साहित्यकारों के बीच विशिष्ट ख्याति और प्रतिष्ठा के व्यक्ति बन गए। उनके अध्ययन, अनुशीलन, अभिरुचि एवं रचनात्मक गतिविधियों का दायरा विस्तृत है। कला, साहित्य और ज्ञान की विविध विधाओं के अतिरिक्त परंपरा और संस्कृति के विविध रूपों और अनुशासनों के बीच समन्वय और संवाद की कल्पनाशील जनतांत्रिक पहल के लिए वे पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। लेखन और आयोजनों के द्वारा उन्होंने अनेक बार अपनी सामासिक अंतर्दृष्टि, जनतांत्रिक सोच और समावेशी उदार विनियोग-बुद्धि प्रमाणित की है। अशोक वाजपेयी का जीवन,

कला, साहित्य, संस्कृति, समाज आदि के संबंध में दृष्टिकोण और मनीषा आधुनिक अर्थों में भारतीय और वैश्विक एक साथ है ।

अशोक वाजपेयी एक कवि और साहित्यकार के रूप में हिंदी में 'अकविता' के अनास्थावादी नकारात्मक आंदोलन का स्वस्थ सकारात्मक समाजवादी दृष्टिकोण और संवेदना द्वारा सर्जनात्मक प्रतिकार करते हुए सामने आए थे । उनकी संवेदना, भाषा और रचनात्मक चिंताओं ने व्यापक पाठक वर्ग का ध्यान आकृष्ट किया था । वे एक समर्थ संभावना के रूप में इसलिए देखे और पहचाने गए थे कि कविता की जरूरतों और तकाजों की उनकी पहचान खरी थी । वे उन जरूरतों की भरपाई राजनीति और विचारधारा के उत्ताप भरे तात्कालिक तत्त्वों से नहीं करते हुए गहनतर रचनात्मक मानवीय अर्थों की पूछ-पेख के लिए समुद्यत दिखाई पड़े थे । आगे उनकी यह रचनात्मक खोज तो जारी रही किंतु इसके लिए मानव संबंधों के परिवर्तनशील यथार्थ से भरे हुए जीवन और समय-समाज के बीच जैसी गहन सन्नद्धता ऐसे स्वाधीनचेता कवि के लिए अनिवार्य थी, वह उन्हें प्राप्त न हो सकी । उनकी बहुविध व्यस्तताओं भरी जिंदगी ने ऐसा अवसर उन्हें लेने नहीं दिया । वे विविध कलाओं के सौंदर्य तथा दर्शन के शाश्वत प्रश्नों, सरोकारों, ऐंद्रिय सुखों और लालसाओं से अपनी कविता को लैस करते हुए आगे बढ़ चले । उनकी कविता में वैयक्तिक आग्रह बढ़ने लगे । खुशहाल मध्यवर्ग की अभिरुचियों को तुष्ट करने में उनकी कविता में एक तरह की स्वच्छंदता विकसित हुई । एक समर्थ कवि की पहचान उनकी कविता में कौंधती है; एक ऐसा कवि जिसका मानस विस्तृत है, उदार है; संवेदना पर्युत्सुक है और भाषा स्फूर्त, समर्थ, भारहीन और अर्थग्राहिणी है ।

प्रस्तुत कविता अशोक वाजपेयी के कविता संकलन 'कहीं नहीं वहीं' से ली गई है और एक गद्य कविता है । अशोक वाजपेयी ने गद्य कविताएँ काफी संख्या में लिखी और प्रकाशित की हैं । हिंदी में 'गद्यकाव्य' तो पुराना है जो वस्तुतः कविता नहीं, गद्य का ही एक रूप हुआ करता था; किंतु 'गद्यकविता' नई है और पिछले 15-20 वर्षों में अनेक कवियों द्वारा पर्याप्त संख्या में लिखी गई है । फ्राँसीसी, अंग्रेजी आदि यूरोपीय तथा अमेरिकी भाषाओं में नए ढंग की इस गद्यकविता का लेखन बीसवीं शती के पूर्वार्ध, विशेषकर द्वितीय विश्वयुद्ध के समय से ही, होता रहा है । फ्राँसीसी कवि सेंट जॉन पर्स की ऐसी गद्य कविताएँ टी० एस० एलियट के द्वारा लंबी भूमिका के साथ पेश की गई हैं, किंतु वे आकार में बहुत लंबी हैं । इस तरह की छोटी गद्य कविताएँ, खासतौर पर हिंदी में, बहुत नई हैं और इनका विशिष्ट रूप और आकार-प्रकार समसामयिक अनुभव की विलक्षणता में निहित है । कुछ तो महज फैशन के कारण भी लिखी जाती हैं किंतु मूलतः इनकी रूप-संरचना का उत्स कवि के काव्यानुभव में होता है जो गद्यात्मक होता है । गद्यात्मक यानी-दैनंदिन जीवन अनुभवों की धरती से बोलचाल-बातचीत और सामान्य मनःचिंतन के रूप में उगा हुआ, विवरणधर्मी, युक्ति-तर्क के कारण घुमावदार, पेचीदा और चौरस भी । यह कविता शासक वर्ग, राजनीति, युद्ध, इतिहास और आम आदमी को लेकर आधुनिक प्रसंगों में अनेक प्रश्न उठाती है और कौंध के एक क्षण में अनेक सारी वास्तविकताओं को बेपर्द करती हुई हममें एक ऐसी प्रतीति जगा जाती है जो परमुखापेक्षी और बँधुआ नहीं है, गहरे अर्थों में तटस्थ और मानवीय है । यह कविता समसामयिक हिंदी कविता में 'गद्यकविता' की प्रवृत्ति और रूप संरचना की यहाँ एक बानगी है ।

◆ ◆ ◆

"जो साथ चले थे जाने कब अपनी-अपनी राह कहाँ निकल गए । जाने कहाँ-कहाँ रोशनी की तलाश में भटकने के बाद अब समझ में आ रहा है कि रोशनी कहीं और से नहीं, इन्हीं शब्दों से आ रही है ।"

– अशोक वाजपेयी

हार-जीत

वे उत्सव मना रहे हैं । सारे शहर में रोशनी की जा रही है । उन्हें बताया गया है कि उनकी सेना और रथ विजय प्राप्त कर लौट रहे हैं । नागरिकों में से ज्यादातर को पता नहीं है कि किस युद्ध में उनकी सेना और शासक गए थे, युद्ध किस बात पर था । यह भी नहीं कि शत्रु कौन था पर वे विजयपर्व मनाने की तैयारी में व्यस्त हैं । उन्हें सिर्फ इतना पता है कि उनकी विजय हुई । उनकी से आशय क्या है यह भी स्पष्ट नहीं है : किसकी विजय हुई सेना की, कि शासक की, कि नागरिकों की ? किसी के पास पूछने का अवकाश नहीं है । नागरिकों को नहीं पता कि कितने सैनिक गए थे और कितने विजयी वापस आ रहे हैं । खेत रहनेवालों की सूची अप्रकाशित है । सिर्फ एक बूढ़ा मशकवाला है जो सड़कों को सींचते हुए कह रहा है कि हम एक बार फिर हार गए हैं और गाजे-बाजे के साथ जीत नहीं हार लौट रही है । उस पर कोई ध्यान नहीं देता है और अच्छा यह है कि उस पर सड़कें सींचने भर की जिम्मेवारी है, सच को दर्ज करने या बोलने की नहीं। जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. उत्सव कौन और क्यों मना रहे हैं ?
2. नागरिक क्यों व्यस्त हैं ? क्या उनकी व्यस्तता जायज है ?
3. 'किसकी विजय हुई सेना की, कि नागरिकों की ?' कवि ने यह प्रश्न क्यों खड़ा किया है ? यह विजय किनकी है ? आप क्या सोचते हैं ? बताएँ ।
4. 'खेत रहनेवालों की सूची अप्रकाशित है ।' इस पंक्ति के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है ? कविता में इस पंक्ति की क्या सार्थकता है ? बताइए ।
5. सड़कों को क्यों सींचा जा रहा है ?
6. बूढ़ा मशकवाला क्या कहता है और क्यों कहता है ?
7. बूढ़ा मशकवाला किस जिम्मेवारी से मुक्त है ? सोचिए अगर वह जिम्मेवारी उसे मिलती तो क्या होता ?
8. 'जिन पर है वे सेना के साथ ही जीतकर लौट रहे हैं ।' 'जिन' किनके लिए आया है ? वे सेना के साथ कहाँ से आ रहे हैं, वे सेना के साथ क्यों थे, वे क्या जीतकर लौटे हैं । बताएँ ।
9. गद्य कविता क्या है ? इसकी क्या विशेषताएँ हैं ? इस कविता को देखते-परखते हुए बताएँ ।
10. कविता में किस प्रश्न को उठाया गया है ? आपकी समझ में इसके भीतर से और कौन से प्रश्न उठते हैं ?

कविता के आस-पास

1. अशोक वाजपेयी देश के एक प्रमुख संस्कृतिकर्मी हैं । इनके रचनाकार व्यक्तित्व के संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
2. बूढ़ा मशकवाला कौन हो सकता है ? देश-दुनिया का वह कौन व्यक्ति है जिसकी तुलना आप इस बूढ़े मशकवाले से करना चाहेंगे ।
3. युद्ध का अर्थ क्या दूसरे देश से लड़ाई से ही है, या युद्ध के दूसरे रूप भी हैं; घृणा, हत्या या दंगे क्या युद्ध के रूप नहीं हैं, आप क्या सोचते हैं, अपने मित्रों, शिक्षकों एवं बुजुर्गों से इस विषय पर बातचीत करें ।
4. दुनिया युद्धविहीन किस तरह हो सकती है ? मित्रों के साथ इस बारे में विचार कीजिए, अपने विचारों को सार रूप में लिखकर उसे विद्यालय की गोष्ठी में प्रस्तुत कीजिए ।
5. गद्य कविता हिंदी कविता की नई उपलब्धि है, गद्य कविता का पाठ विशेष लय में बँधा होता है । इसके पाठ में आप अपने शिक्षक की मदद लें । नीचे अभ्यास के लिए अशोक वाजपेयी की एक गद्य कविता **'दरवाजा'** दी जा रही है, आप इसके अतिरिक्त भी गद्य कविताएँ संकलित कर उनका पाठ करें ।

दरवाजा

दरवाजा खुल सकता था । कोई खोले तभी नहीं । अपने आप भी, क्योंकि पूरी तरह बंद नहीं था । किसी ने किया ही नहीं । सबको जाने की जल्दी होती है, ठीक से बंद करने की नहीं । जाने के बाद दरवाजा भुला दिया जाता है । अगर न जाते और वहीं बंद या घिरे रहते तो दरवाजा बना रहता–उसका ख्याल रहता । दरवाजा : घिरे हुए को रोकता है और अनघिरे हुए को अंदर आने से थामता है । दरवाजा न हो तो घिरा-अनघिरा गड्डमड्ड हो जाए । आवाजाही दरवाजे से होती है : पर फिर भी थोड़ा सा बाहर अंदर और थोड़ा सा अंदर बाहर फिसल ही जाता है क्योंकि दरवाजा कभी पूरी तरह से बंद नहीं होता । हम ऐसा करना जानबूझकर भूल जाते हैं ।

भाषा की बात

1. 'हार-जीत' में कौन समास है ?
2. 'ज्यादातर' में 'तर' प्रत्यय है । 'तर' प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
3. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द लिखें –
   युद्ध, सेना, शत्रु, सड़क, रोशनी, उत्सव, शहर, विजय, हार
4. उत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ –
   रोशनी, सड़क, अवकाश, रथ, सेना, सिर्फ, नागरिक, सच, बूढ़ा
5. 'हार' प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ एवं उनका अर्थ लिखें ।
6. 'विजय पर्व' में कौन समास है ?
7. निम्नलिखित पंक्तियों से सर्वनाम चुनें एवं यह बताएँ कि वे किस सर्वनाम के उदाहरण हैं –
   (क) किसी के पास पूछने का अवकाश नहीं है ।
   (ख) यह भी नहीं कि शत्रु कौन था ।
   (ग) वे उत्सव मना रहे हैं ।
   (घ) उन्हें सिर्फ इतना पता है कि उनकी विजय हुई ।
8. 'विजय' शब्द में 'वि' उपसर्ग है । 'वि' उपसर्ग से चार अन्य शब्द बनाएँ ।
9. वाक्य रचना की दृष्टि से कविता के किन्हीं तीन वाक्यों की बनावट बताएँ ।
10. कविता से सभी क्रियापद चुनिए ।

शब्द निधि

खेत रहना : मारा जाना

मशकवाला : पानी रखनेवाला चमड़े का थैला (मशक) रखने वाला ।